बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान हेतु बुनियादी ढाँचे एवं सामर्थ्य की आवश्यकता

केवलानंद कांडपाल*

विद्यालयों में पढ़ने-लिखने और संख्या की समझ पर लगातार काम करने के बावजूद बहुत बच्चे कक्षा-स्तर के अनुरूप अपेक्षित दक्षताओं (बहुत बार अपनी वर्तमान कक्षाओं से पूर्व की कक्षा-स्तर के अनुरूप दक्षताओं को भी) को प्राप्त करने में असफल हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्वीकार किया गया है कि वर्तमान समय में भारत में 'अधिगम का संकट' है। इस नीति की पाठ्यचर्या एवं शिक्षणशास्त्र की नई व्यवस्था 5+3+3+4 के तहत तीन-आठ वर्ष की उम्र को फाउंडेशनल स्टेज कहा गया है। फाउंडेशनल स्टेज की अवधि जीवनभर सीखने और विकास की बुनियाद रखती है और यह वयस्क जीवन की गुणवत्ता का एक प्रमुख निर्धारक है। बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए 5 जुलाई 2021 को एक राष्ट्रीय मिशन 'समझ के साथ पढ़ने और संख्या ज्ञान में प्रवीणता के लिए राष्ट्रीय पहल' शुरू किया गया था। इसे संक्षेप में 'निपुण (NIPUN) भारत मिशन' कहा गया है। वर्तमान में आँगनबाड़ी केंद्र के कार्य दायित्वों में तीन से छह वर्ष के लिए पूर्व-प्राथमिक एवं अनौपचारिक शिक्षा प्रदान करना शामिल है। उत्तराखंड राज्य ने 12 जुलाई 2022 से 'बाल वाटिका' (पूर्व-प्राथमिक कक्षा) की शुरुआत करके राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू करने वाला पहला राज्य होने का दावा किया है। प्राथमिक विद्यालय परिसर में संचालित आँगनबाड़ी केंद्रों को 'बाल वाटिका' की भूमिका में देखा जा रहा है। इसलिए यह समीचीन जान पड़ता है कि वर्तमान में संचालित आँगनबाड़ी केंद्रों की वस्तुस्थिति, इनकी पाठ्यचर्या का गहन अवलोकन, इन केंद्रों में नामांकित तीन से छह वर्ष की उम्र के बच्चों की भाषा एवं गणितीय दक्षता स्तर का आकलन करके यह जानने-समझने की कोशिश की जाए कि वर्ष 2026–27 तक बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए 'निपुण भारत मिशन' में अपना योगदान देने के लिए किस तरह से तैयार हैं? उनकी चुनौतियाँ एवं ज़रूरतें क्या हैं? इसी उद्देश्य से यह शोध अध्ययन कर शोध से प्राप्त अनुभव एवं अंतर्दृष्टि को इस शोध-पत्र में प्रस्तुत किया गया है।

सामान्य तौर पर जन्म से लेकर आठ वर्ष की उम्र को प्रारंभिक बाल्यावस्था के रूप में परिभाषित किया जाता है। इसमें भी तीन वर्ष से आठ वर्ष की बाल्यावस्था को शैक्षिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। सतत विकास लक्ष्य (एस.डी.जी.) के संदर्भ में प्रारंभिक बाल्यावस्था की शिक्षा को विशिष्ट लक्ष्य के रूप में घोषित किया गया है।

*प्रधानाचार्य, राजकीय इंटरमीडियट कालेज, मंडलसेरा, जनपद-बागेश्वर, उत्तराखंड 263642

एस.डी.जी. 4.2 के तहत यह सुनिश्चित किया जाना है कि वर्ष 2030 तक सभी बालक एवं बालिकाओं (वंचित समूहों, दिव्यांगों एवं स्वास्थ्य के स्तर पर पिछड़े सहित) की उच्च गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक देखभाल एवं प्री-स्कूल तक पहुँच हो, जिससे बच्चे आगामी प्रारंभिक शिक्षा के लिए क्षमतावान हो सकें। विकास की दृष्टि से भी प्रत्येक बच्चे के लिए जीवन के प्रारंभिक वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं, शरीर वैज्ञानिकों का मानना है कि इस दौरान बच्चों का विकास अन्य आयु वर्ग कि तुलना में तीव्र गति से होता है। शोधों के आधार पर यह दावा किया जाता है कि बच्चे के मस्तिष्क का 85 प्रतिशत विकास छह वर्ष की आयु के पूर्व ही हो जाता है। वस्तुतः बच्चे का समग्र विकास न केवल पोषण एवं स्वास्थ्य से प्रभावित होता है वरन बच्चा प्राप्त अनुभवों एवं परिवेशीय वातावरण से भी प्रभावित होता है।

इसलिए इस आयु-अवधि में बच्चों को बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के ठोस अनुभव मिलने ही चाहिए, इस आधार पर आगामी शिक्षार्थी जीवन में सीखने एवं समग्र विकास में कोई रुकावट न आ सके। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में अनुशंसित 5+ 3+3+4 शिक्षा प्रणाली में, 3–8 वर्ष तक के उम्र के बच्चों कि शिक्षा को फाउंडेशनल स्टेज की शिक्षा कहा गया है। पाँच वर्ष की फाउंडेशनल स्टेज की शिक्षा में शुरुआती तीन वर्षों में, तीन वर्ष से छह वर्ष तक की उम्र के बच्चों के लिए कक्षा 1 से पूर्व तीन वर्ष प्री-प्राइमरी स्तर की शिक्षा प्रस्तावित की गई है। इन तीन वर्षों में पहले शुरुआती दो वर्ष पूर्व प्राथमिक शिक्षा, दूसरा तथा तीसरा वर्ष 'बाल वाटिका' के रूप में प्रस्तावित किया गया है। बच्चे 6 वर्ष की उम्र में कक्षा 1 में औपचारिक शिक्षा में प्रवेश करेंगे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक विशिष्ट पहलू यह भी है कि इसमें कक्षा 3 तक के बच्चों में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरेसी) विकसित करने पर बल दिया गया है। इसके लिए केंद्र सरकार ने 5 जुलाई 2021 को एक राष्ट्रीय मिशन 'निपुण भारत' की शुरुआत की। इसे नेशनल इनिसिएटिव फॉर प्रोफिशिएंसी इन रीडिंग विद अंडरस्टैंडिंग एंड न्यूमेरेसी कहा गया है। इस मिशन के तहत तीन से आठ वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों की पढ़ने-लिखने एवं गणितीय समझ की क्षमता विकसित की जानी है। इस बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के लक्ष्यों को हासिल करने के लिए वर्ष 2026–27 की समय सीमा तय की गई है। यहाँ बुनियादी साक्षरता का आशय मौखिक भाषा विकास, डीकोडिंग (ध्वनि और आकार में तालमेल), पढ़ने का प्रवाह, पाठ की समझ एवं उद्देश्यपूर्ण लेखन से है। बुनियादी संख्या ज्ञान में संख्या बोध, आकार और स्थानिक से संबंध, नाप, आँकड़ों का संधारण (data processing) सम्मिलित है।

भारत में प्री-स्कूल शिक्षा की व्यवस्था सरकारी, निजी एवं गैर-सरकारी संगठनों द्वारा की जाती है। सरकारी क्षेत्र में प्री-स्कूली स्तर की शिक्षा, प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा केंद्र (ई.सी.सी.ई.), (इन्हें आम बोलचाल की भाषा में आँगनबाड़ी केंद्र भी कहा जाता है) द्वारा की जा रही होगी ऐसा विश्वास किया जाता रहा है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के लागू होने के बाद आँगनबाड़ी केंद्रों से अनिवार्यतया अपेक्षित है कि

वह प्री-प्राइमरी या नर्सरी स्तर की शिक्षा प्रदान करें तथा बुनियादी भाषायी तथा गणितीय दक्षता के साथ प्राथमिक स्तर की पहली कक्षा (कक्ष 1) में सहज पारगमन में सहायक बनें।

वर्तमान में उत्तराखंड राज्य में 20,067 आँगनबाड़ी केंद्र संचालित हैं, इनमें से 5,120 छोटे (मिनी) आँगनबाड़ी केंद्र हैं। इनमें से 6,048 आँगनबाड़ी केंद्र सरकारी प्राथमिक विद्यालय परिसर में संचालित हैं। उत्तराखंड राज्य ने 12 जुलाई 2022 को 'बाल वाटिका' (प्राइमरी से पहले की कक्षा) का शुभारंभ करके *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* लागू करने वाला पहला राज्य होने का दावा किया है। पहले चरण में, सरकारी प्राथमिक विद्यालय परिसर में संचालित 4,447 आँगनबाड़ी केंद्रों में 'बाल-वाटिका' संचालित करने का निर्णय लिया गया है। पहले चरण में 'बाल वाटिकाएँ' आँगनबाड़ी केंद्रों में संचालित होंगी। ऐसे आँगनबाड़ी केंद्रों में 3–4 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के लिए आँगनबाड़ी 1, 4–5 वर्ष आयु वर्ग बच्चों के लिए आँगनबाड़ी 2 तथा 5–6 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के लिए आँगनबाड़ी 3 के रूप में 'बाल वाटिका' संचालित होगी।

इन बाल वाटिकाओं में आवश्यक भाषायी तथा गणितीय दक्षताओं के साथ बच्चों को कक्षा 1 में प्रवेश के लिए तैयार किया जाना अपेक्षित है। ये आँगनबाड़ी केंद्र, महिला एवं बाल विकास विभाग के अंतर्गत संचालित हैं। इन आँगनबाड़ी केंद्रों में कार्यरत कार्मिकों, जो महिला ही होती हैं, को कार्यकत्री या सहायक कार्यकत्री कहा जाता है। उत्तराखंड में, पूर्व में इनकी योग्यता दसवीं पास थी, जिसे वर्ष 2022 में बढ़ाकर बारहवीं कर दिया गया है। प्री-प्राइमरी या नर्सरी कक्षाओं के शिक्षण के लिए किसी भी प्रकार का प्रशिक्षण योग्यता या अनुभव इनके पास नहीं होता और न ही यह आँगनबाड़ी कार्यकत्री या सहायक कार्यकत्री के रूप में चयन के लिए यह आवश्यक होता है। 'बाल वाटिका' के रूप में चिह्नित आँगनबाड़ी केंद्रों में कार्यरत कार्यकत्रियों का 'बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान' के दृष्टिगत अभी तक किसी भी प्रकार का औपचारिक प्रशिक्षण नहीं हुआ है। अक्तूबर 2023 में गूगल मीट के माध्यम से इनका अभिमुखीकरण करने का प्रयास किया गया है।

जनपद बागेश्वर में 874 आँगनबाड़ी केंद्रों में 14,128 बच्चे नामांकित हैं। इनका विवरण तालिका 1 में दिया गया है—

तालिका 1— जनपद बागेश्वर में आँगनबाड़ी केंद्र एवं नामांकित बच्चों की संख्या (30 सितंबर 2023)

क्र.सं.	विकास खंड	पूर्ण आँगनबाड़ी केंद्र	मिनी आँगनबाड़ी केंद्र	योग	नामांकित बच्चे		योग
					बालक	बालिकाएँ	
1.	बागेश्वर	229	96	325	2,841	2,719	5,560
2.	गरुड़	154	94	248	2,097	2,007	4,104
3.	कपकोट	178	83	261	2,283	2,181	4,464
	योग	**561**	**273**	**834**	**7,221**	**6,907**	**14,128**

स्रोत— जिला महिला एवं बाल विकास परियोजना कार्यालय, जनपद—बागेश्वर

विद्यालयी शिक्षा उत्तराखंड से प्राप्त नवीनतम आँकड़ों के अनुसार वर्ष 2020–21 में जनपद बागेश्वर में प्राथमिक विद्यालयों में 11,073 बच्चे नामांकित थे। जिसका विवरण तालिका 2 में दिया गया है।

तालिका 1 एवं 2 का विश्लेषण करने पर एक तथ्य स्पष्ट रूप से सामने आता है कि जनपद का आँगनबाड़ी केंद्र जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में नामांकन का मुख्य पोषक है। यदि आँगनबाड़ी केंद्र मज़बूत भाषायी एवं गणितीय बुनियाद के साथ पूर्व-प्राथमिक या नर्सरी शिक्षा प्रदान करने में असमर्थ रहते हैं तो कक्षा 1 में सहज पारगमन नहीं हो सकेगा और अंततः इसका परिणामी प्रभाव आगामी वर्षों में प्राथमिक स्तर की शिक्षा की गुणवत्ता पर पड़ना स्वाभाविक है। 'बच्चों के जीवन के पहले आठ वर्ष बहुत ही महत्वपूर्ण होते हैं। इन शुरुआती वर्षों में ही उसके जीवनभर की भलाई या कल्याण और सभी आयामों, यथा— शारीरिक, संज्ञानात्मक और सामाजिक-भावनात्मक में समग्र वृद्धि और विकास की नींव पड़ जाती है।'

तालिका 2 — जनपद बागेश्वर में प्राथमिक विद्यालयों में नामांकित बच्चे (2020–21)

क्र.सं.	विवरण	बालक	बालिका	योग
1.	सामान्य	2403	2939	5342
2.	अनुसूचित जाति	2475	2662	5137
3.	अनुसूचित जनजाति	34	38	72
4.	अन्य पिछड़ी जाति	262	260	522
	कुल योग	5174	5899	11073

स्रोत— विद्यालयी शिक्षा उत्तराखंड, उत्तराखंड का शैक्षिक परिदृश्य-शैक्षिक सांख्यिकी 2020–21

अध्ययन की आवश्यकता

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 घोषित होने के बाद, यह नीतिगत दस्तावेज, आगामी वर्षों तक, भारतीय शैक्षिक परिदृश्य में प्रमुख मार्गदर्शक दस्तावेज बना रहेगा। अतः यह समीचीन प्रतीत होता है कि इसके प्री-स्कूली शिक्षा से सरोकार रखने वाले विचारणीय पहलुओं पर विचार-विमर्श किया जाए। *"राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में सीखने के लिए तत्काल और आवश्यक शर्त के रूप में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान पर बल दिया गया है।" *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में, कक्षा 3 तक के बच्चों में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरेसी) विकसित करने पर बल दिया गया है। इसके लिए केंद्र सरकार द्वारा 5 जुलाई 2021 को एक राष्ट्रीय मिशन ''निपुण भारत'' की शुरुआत की गई है। 'निपुण भारत' मिशन का महत्वाकांक्षी लक्ष्य है— तीन से आठ वर्ष आयु वर्ग के सभी बच्चों का शिक्षा की मुख्यधारा में समावेशन, शिक्षार्थी जीवन के आगामी वर्षों में बच्चों में सतत रुचि एवं उत्साह का बने रहना तथा एक ठोस बुनियाद के साथ स्कूली स्तर पर औपचारिक शिक्षा में प्रवेश करना।

यदि प्री-स्कूली शिक्षा की मुख्यधारा में सभी बच्चों का एक ठोस बुनियाद के साथ समावेशन करना *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* का महत्वपूर्ण सरोकार है (यह सुखद रूप से उत्साहवर्द्धक है) तो इस समावेशन के लिए उपयुक्त बुनियादी ढाँचे एवं सामर्थ्य की जाँच-पड़ताल करना, इसके लिए विमर्श करना बहुत आवश्यक हो जाता है। इस अध्ययन की आवश्यकता इस कारण से भी महसूस होती है कि फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरेसी संबंधी कतिपय अध्ययन विगत में किए गए हैं परंतु आँगनबाड़ी

केंद्रों की पूर्व-प्राथमिक शिक्षा में भूमिका एवं सामर्थ्य के संदर्भ में अध्ययनों का अभाव दिखाई देता है। यह अध्ययन अंतिम नहीं है, इस विचार प्रवाह में बहुत सारे उपयोगी विचारों को आमंत्रित करने और समाहित करने की ज़रूरत के दृष्टिगत यह शोध अध्ययन किया गया है।

शोध उद्देश्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में पूर्व-प्राथमिक या नर्सरी स्तर की शिक्षा में आँगनबाड़ी केंद्रों की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया गया है। इसी स्तर पर सार्वभौमिक 'बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान' की शुरुआत होनी है, जिससे वर्ष 2026–27 तक कक्षा 3 के स्तर पर सार्वभौमिक बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान का महत्वाकांक्षी लक्ष्य प्राप्त किया जा सके। सबसे महत्वपूर्ण बात जो रेखांकित करने योग्य है, वह यह है कि पूर्व-प्राथमिक या नर्सरी कक्षाओं से कक्षा 1 तक बच्चों का सहज पारगमन, साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की मजबूत बुनियाद के साथ होना है। अतः यह शोध अध्ययन निम्नांकित उद्देश्यों के आधार पर किया गया था—

- पूर्व-प्राथमिक या नर्सरी शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में आँगनबाड़ी केंद्र की मौजूदा आधारभूत सुविधाओं एवं अकादमिक सामर्थ्य को जानना-समझना।
- आँगनबाड़ी केंद्र में नामांकित तीन-छह आयु वर्ग के बच्चों की बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान से संदर्भित भाषा एवं गणितीय दक्षता का आकलन करना।
- बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के संदर्भ में आँगनबाड़ी केंद्र में कार्यरत कार्यकत्रियों की परिचय या अवधारणात्मक समझ की वस्तु-स्थिति जानना तथा एतद्संबंधी अभिमुखीकरण या प्रशिक्षण की स्थिति एवं आवश्यकता का आकलन करना।
- बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के लक्ष्य को प्राप्त करने से संदर्भित आँगनबाड़ी केंद्र में कार्यरत कार्यकत्रियों की चुनौतियों को चिह्नित करना।
- अध्ययन अनुभव के आधार पर व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करना।

साहित्यावलोकन

इस अध्ययन के क्रम में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की वस्तु-स्थिति की गहरी समझ हेतु भारत सरकार के *फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरेसी* ('निपुण भारत') *गाइडलाइंस फॉर इम्प्लीमेंटेशन*, *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा फाउंडेशनल स्टेज 2022*, *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*, रूम टू रीड द्वारा अद्यतन प्रकाशित *फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरेसी रिपोर्ट* (2 जनवरी 2023), *यू-डायस रिपोर्ट 2021–22, स्कूल शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* का गहन अनुशीलन किया गया। इसके अतिरिक्त के शोध अध्ययन, अर्ली लिटरेसी एंड न्यूमेरेसी एक्टिविटीज (एर्सोन एंड रोद्रिगुए, 2020), न्यूमेरेसी रिलेटेड एंगेजमेंट (सिमोन, 2024), (बाल, जे., पेरिस, एस. जी., गोविन्द, आर. 2014), आदि के विश्लेषण से इस अध्ययन को एक स्पष्ट दिशा प्राप्त हुई। इसके साथ-साथ सोद्देश्य चयनित आँगनबाड़ी केंद्रों के अवलोकन, इनमें कार्यरत आँगनबाड़ी कार्यकत्रियों से खुली साक्षात्कार प्रश्नावली के माध्यम से गुणात्मक समंक एकत्रित

किए गए। चयनित आँगनबाड़ी केंद्रों में नामांकित तीन-छह आयुवर्ग के बच्चों का भाषा एवं गणितीय दक्षताओं का आकलन करके प्राथमिक समंक प्राप्त किए गए। जनपद के महिला एवं बाल विकास परियोजना कार्यालय से आँगनबाड़ी केंद्रों से संबंधित शासकीय आदेश, उपलब्ध प्राथमिक समंकों का उपयोग एवं विश्लेषण किया गया।

शोध प्रविधि

इस शोध अध्ययन का स्वरूप गुणात्मक एवं मात्रात्मक शोध अध्ययन का मिश्रित रूप था। अध्ययन में सम्मिलित 10 आँगनबाड़ी केंद्रों के गहन अवलोकन, केंद्र में नामांकित तीन से छह वर्ष की उम्र के बच्चों का भाषा एवं गणितीय दक्षता के आकलन और इन केंद्रों में कार्यरत आँगनबाड़ी कार्यकत्रियों से खुले साक्षात्कार प्रश्नावली के माध्यम से मात्रात्मक एवं गुणात्मक समंक प्राप्त किए गए। राष्ट्रीय साक्षरता एवं संख्या ज्ञान दक्षता पहल ('निपुण भारत'), राष्ट्रीय मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान मिशन, स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा विकसित 'निपुण भारत' तालिका 3 और 4 में भाषा (बाल वाटिका) एवं गणित (बाल वाटिका) के माध्यम से तीन से छह आयु वर्ग के बच्चों की दक्षताओं का आकलन किया गया है।

प्रतिदर्श

इस अध्ययन में जनपद बागेश्वर के फल्याँटी एवं आरे संकुल के 10 आँगनबाड़ी केंद्रों का सोद्देश्य चयन किया गया। इनमें 10 आँगनबाड़ी केंद्रों में से 8 पूर्ण आँगनबाड़ी केंद्र तथा 2 मिनी आँगनबाड़ी केंद्र थे। प्रत्येक पूर्ण आँगनबाड़ी केंद्र में दो कार्यकत्रियाँ कार्यरत हैं, इनमें से एक मुख्य तथा दूसरी सहायक कार्यकत्री हैं। मिनी आँगनबाड़ी केंद्र में केवल एक सहायक कार्यकत्री कार्यरत हैं। इन 10 आँगनबाड़ी केंद्रों में से 4 आँगनबाड़ी केंद्र सरकारी प्राथमिक विद्यालय परिसर में संचालित हैं। इन 10 आँगनबाड़ी केंद्रों में तीन से छह आयु वर्ग के कुल 45 बच्चों को इस अध्ययन में सम्मिलित किया गया था। इन 45 बच्चों में 24 बालक एवं 21 बालिकाएँ थीं।

शोध उपकरण

इस शोध अध्ययन के लिए राष्ट्रीय साक्षरता एवं संख्या ज्ञान दक्षता पहल ('निपुण भारत'), राष्ट्रीय मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान मिशन, स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा विकसित 'निपुण भारत' तालिका— भाषा (बाल वाटिका) एवं गणित (बाल वाटिका) का प्रयोग किया गया था। इसके द्वारा शोध अध्ययन हेतु चयनित 10 आँगनबाड़ी केंद्रों में नामांकित तीन से छह आयु वर्ग के बच्चों की दक्षताओं का आकलन किया गया।

आँगनबाड़ी केंद्र

भारत सरकार द्वारा प्रायोजित एवं वित्त पोषित 'समेकित बाल विकास योजना' 2 अक्तूबर 1975 से प्रारंभ की गई। छह वर्ष तक की आयु के बच्चों के दृष्टिगत इस योजना के उद्देश्य अग्रलिखित हैं—

- छह वर्ष आयु वर्ग तक के बच्चों की पोषण एवं स्वास्थ्य दशाओं में सुधार करना।

- बच्चों के समुचित मनोवैज्ञानिक, शारीरिक एवं सामाजिक विकास की नींव रखना।
- मृत्यु दर, बीमारी, कुपोषण की समस्या को कम करना तथा स्कूल ड्राप आउट की प्रवृत्ति को कम करना।
- बच्चों के विकास को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न सरकारी कार्यक्रमों में तालमेल बिठाना।
- बच्चों की सामान्य स्वास्थ्य एवं पोषण की आवश्यकताओं की देखभाल के लिए माताओं की क्षमता का संवर्धन करना।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा के दृष्टिगत बच्चों को अनौपचारिक शिक्षा।

आँगनबाड़ी केंद्रों के माध्यम से उक्त उद्देश्यों की संप्राप्ति की अपेक्षा की जाती है। गर्भवती एवं धात्री महिलाओं की पोषण एवं स्वास्थ्य आवश्यकताओं को संबोधित करना भी आँगनबाड़ी के कार्यक्षेत्र में समाहित है। इसके अतिरिक्त महिलाओं एवं किशोरियों के स्वास्थ्य एवं पोषण की विभिन्न योजनाओं को लाभार्थी तक पहुँचाने में इन केंद्रों को एक महत्वपूर्ण एजेंसी के रूप में देखा जाता है।

बाल वाटिका

पाँच वर्ष की आयु से पहले बच्चा प्रारंभिक कक्षा या बाल वाटिका (जो कक्षा 1 से पहले की कक्षा है) में स्थानांतरित हो जाएगा। बाल वाटिका की यह कक्षा बच्चे की संज्ञानात्मक, भावनात्मक, शारीरिक क्षमताओं तथा बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ.एल.एन.) के विकास पर केंद्रित होगी। इस अवधि में बच्चा 3 माह का स्कूल तैयारी कोर्स 'विद्या प्रवेश' पूर्ण करेगा। 'निपुण भारत' मिशन के तहत कक्षा 1 में प्रवेश की तैयारी के दृष्टिगत इसके निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं—

- कक्षा 1 में प्रवेश लेने वाले विभिन्न पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चों को स्कूल के लिए तैयार करना।
- कक्षा 1 में बच्चों के सहज पारगमन को सुनिश्चित करना।
- बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए कक्षा में मनोरंजक एवं प्रेरक वातावरण का सृजन करना ताकि उन्हें खेल-खेल में सीखने और उनकी आयु के अनुकूल एवं उपयुक्त शिक्षाप्रद अनुभव प्रदान किए जा सकें।
- खेल आधारित माध्यमों से बच्चों में संज्ञानात्मक एवं भाषायी कौशलों का विकास करना। ये ऐसी पूर्व शर्तें हैं जो बच्चों को पढना-लिखना सीखने एवं संख्या ज्ञान प्राप्त करने के लिए तैयार करती हैं।

बाल वाटिका कक्षा में बच्चों को किसी प्रकार की परीक्षा से नहीं गुज़रना है, अतः अवलोकन, वृतांत लेखन, पोर्ट-फोलियो, रेटिंग स्केल, जाँच सूची, बच्चे की सहभागिता एवं प्रदर्शन के माध्यम से फॉरमेटिव असेसमेंट किया जाएगा।

'निपुण भारत' मिशन

वर्ष 2026–27 तक भारत में स्कूली शिक्षा के दृष्टिगत सार्वभौमिक बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भारत सरकार द्वारा बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान पर राष्ट्रीय मिशन 'निपुण भारत' 5 जुलाई 2021 से लागू किया गया।

इसके अंतर्गत, बच्चों के समग्र विकास के लिए उन्हें आयु के अनुसार उपयुक्त अनुभव प्रदान करने के लिए एक रूपरेखा सुझाई गई है। इसमें तीन से आठ वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के लिए निरंतरता में 'सीखने के प्रतिफलों' का निर्धारण किया गया है। तीन विकासात्मक लक्ष्यों के माध्यम से बच्चों के समग्र विकास करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा गया है। शारीरिक गत्यात्मक विकास, सामाजिक-भावनात्मक विकास, साक्षरता और संख्या ज्ञान, संज्ञानात्मक विकास को तीन विकासात्मक लक्ष्यों समाहित किया गया है। तीन विकासात्मक लक्ष्य निम्नवत हैं—

1. बच्चे का अच्छा स्वास्थ्य एवं खुशहाली बनाए रखना।
2. बच्चे का प्रभावशाली संप्रेषक बनना।
3. बच्चों द्वारा सीखने के प्रति उत्साह प्रदर्शित करना और अपने आस-पास के परिवेश से जुड़ना।

आँगनबाड़ी केंद्र में नामांकित बच्चों का दक्षता स्तर का आकलन

प्रतिदर्श में चयनित 9 आँगनबाड़ी केंद्रों में नामांकित तीन-छह आयु वर्ग के 45 बच्चों का 'निपुण भारत' अभियान के तहत सुझाई गई दक्षता आकलन तालिका के माध्यम से भाषा एवं गणितीय दक्षताओं का आकलन किया गया। दक्षता आकलन के लिए इन 45 बच्चों में से कुछ बच्चों का निष्पादन दक्षता अनुरूप नहीं था या वे आकलन के दौरान अनुपस्थित थे (आँगनबाड़ी केंद्र घिरोली में तीन-छह आयु वर्ग का कोई बच्चा नामांकित नहीं है)। आकलन के लिए बच्चों से बातचीत की गई, अधिकतर बच्चे अपनी घर की भाषा (यह भाषा कुमाँउनी है) में सहज थे, अतः इन बच्चों से कुमाँउनी भाषा में भी बातचीत की गई। यह आकलन अगस्त–सितंबर 2023 में किया गया था। इस आकलन के परिणामों को तालिका 3 एवं 4 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 3— 'निपुण भारत' अभियान तालिका—भाषा (बाल वाटिका)

विषय	दक्षताएँ	बालक	बालिका
मौखिक भाषा	1. दोस्तों और शिक्षकों से बात करना।	19	17
	2. समझ के साथ तुकांत/कविताएँ गाना।	11	10
पढ़ना	3. किताबों को देखना और चित्रों की मदद से कहानी पढ़ने का प्रयास करना।	09	07
	4. कुछ परिचित दोहराए गए शब्दों को पहचानने और इंगित करने की शुरुआत करना (दृष्टि शब्दों या खाद्य कंटेनर/रैपर पर छपे शब्द)।	07	06
	5. अक्षरों एवं संगत ध्वनियों को पहचानना।	10	09
	6. कम से कम दो अक्षरों वाले सरल शब्दों को पढ़ना।	08	07
लेखन	7. खेल के दौरान पहचान वाले अक्षरों को लिखने का प्रयास करना।	05	04
	8. आत्म अभिव्यक्ति के लिए पेंसिल घसीटना या चित्र बनाना।	12	13
	9. पेंसिल को ठीक से पकड़ना और पहचानने योग्य अक्षर बनाने के लिए उपयोग करना।	10	11
	10. अपने नाम के पहले शब्द को पहचानना	19	16

तालिका 4— 'निपुण भारत' अभियान तालिका—गणित (बाल वाटिका)

विषय	दक्षताएँ	बालक	बालिका
संख्या ज्ञान	1. वस्तुओं की गिनती और 10 तक संख्याओं से सह-संबंध स्थापित करना।	18	16
	2. 10 तक के अंकों को पहचानना और पढ़ना।	19	18
	3. वस्तुओं की संख्या के संदर्भ में दो समूहों की तुलना करना और अधिक/कम/बराबर आदि जैसे शब्दों का उपयोग करना।	21	19
	4. एक क्रम में घटनाओं की संख्या/वस्तुओं/आकृतियों/घटनाओं को व्यवस्थित करना।	16	15
	5. वस्तुओं को उनकी अवलोकनीय विशेषताओं के आधार पर वर्गीकृत करना और वर्गीकरण के मानदंड का संचार करना।	11	09
	6. अपने आसपास की विभिन्न वस्तुओं के संदर्भ में तुलनात्मक शब्दों का उपयोग करना, जैसे—लंबे, सबसे लंबे, सबसे छोटे से अधिक, हल्के आदि।	22	19

आकलन (तालिका 3) से स्पष्ट है कि मौखिक भाषा में बच्चों का दक्षता स्तर अपेक्षाकृत बेहतर है। बालक एवं बालिकाओं दोनों का प्रदर्शन स्तर संतोषजनक दिखाई देता है। पढ़ने की दक्षता में बच्चों का प्रदर्शन औसत या औसत के आसपास ही प्रतीत होता है। आकलन के दौरान बच्चों से बातचीत में बालिकाओं की तुलना में बालक अधिक मुखर थे। बालिकाओं की कम मुखरता के बारे में कार्यकत्रियों ने बातचीत में बताया कि ये बालिकाएँ अच्छी हैं, कम बोलती हैं। इससे इस बात का अनुमान किया जा सकता है कि बालिकाओं को कम उम्र से एक विशेष साँचे में ढाला जाता है, ऐसा न केवल उनके घरों या परिवेश में होता है वरन आँगनबाड़ी केंद्र भी इस अवधारणा को चुनौती देते दिखाई नहीं देते आते हैं। लेखन दक्षता में बच्चों का प्रदर्शन, पढ़ने की दक्षता की तुलना में बेहतर दिखाई देता है। यहाँ भी आकलन के दौरान पहचान वाले अक्षरों को लिखने में बच्चे कठिनाई महसूस करते दिखाई दिए। पढ़ने की दक्षता से, लेखन दक्षता में बच्चों के प्रदर्शन के बारे में आँगनबाड़ी केंद्र में कार्यरत कार्यकत्रियों से बातचीत में एक तथ्य सामने आया कि बच्चों को पढ़ने के अभ्यास से पहले लेखन का अभ्यास कार्य कराया जाता है, उदाहरण के लिए वर्ण-माला लिखना, ब्लैकबोर्ड से शब्दों को लिखना, किताब से लिखना आदि। बच्चे लिखे हुए को अपनी कापी में लिख लेते हैं परंतु उसको पढ़कर बताने, अर्थ-संदर्भ बताने में कठिनाई महसूस करते हैं। मौखिक भाषा में बेहतर प्रदर्शन, एक सकारात्मक तथ्य है, इससे यह अंतर्दृष्टि मिलती है कि भाषायी दक्षता के लिए मौखिक भाषा या मौखिकता का उपयोग किया जाना आवश्यक है। निःसंदेह इसके लिए बच्चों की घर की भाषा को जगह देने की आवश्यकता है।

आकलन (तालिका 4) से स्पष्ट है कि गणित विषय में बच्चों की दक्षता का स्तर भाषा की तुलना में बेहतर है। आपने आस-पास की वस्तुओं के संदर्भ में, तुलनात्मक शब्दों का उपयोग, कम या अधिक या बराबर शब्दों का उपयोग बच्चों के परिवेशीय संदर्भ में बहुत आम है। संभवतया इसी कारण से, विशेषकर अवलोकन आधारित गणितीय दक्षताओं में बच्चों का प्रदर्शन बेहतर प्रतीत

होता है। इस विषय में बालक एवं बालिकाएँ दोनों ही सामान रूप से बेहतर प्रदर्शन करते प्रतीत होते हैं। इससे इस रूढ़िबद्ध अवधारणा को चुनौती मिलती है कि बालिकाएँ गणित विषय में बेहतर प्रदर्शन नहीं कर सकती, अतः उन्हें इसकी जगह कोई अन्य विषय पढ़ना चाहिए। गणित विषय के शिक्षण में बच्चों के परिवेशीय गणित संबंधी अनुभवों को समाहित करने से बच्चे गणितीय दक्षताओं को बेहतर ढंग से प्राप्त कर सकते हैं। इसके गहन शैक्षणिक निहितार्थ हैं।

आँगनबाड़ी केंद्रों का अवलोकन

आँगनबाड़ी केंद्रों के अवलोकन से एक तथ्य स्पष्ट रूप से सामने आया कि 0-3 आयु वर्ग के बच्चों की अच्छी संख्या होने के बावजूद 3-6 आयु वर्ग के बच्चों में एकाएक कमी हो जाती है। यह तालिका 5 से अधिक स्पष्ट हो जाता है।

0–3 वर्ष आयु वर्ग के 300 बच्चे नामांकित हैं, जबकि 3–6 वर्ष आयु वर्ग में यह संख्या मात्र 45 है। विगत वर्षों में भी कमोबेश यही प्रवृति दिखलाई देती है। इस एकाएक कमी का यह कारण सामने आया कि 3 वर्ष की उम्र होते-होते आर्थिक रूप से समर्थ अभिभावक अपने बच्चों का दाखिला निजी विद्यालयों की नर्सरी कक्षाओं में करा लेते हैं। सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में तो नर्सरी कक्षाएँ संचालित होती नहीं हैं। आँगनबाड़ी केंद्रों में वही बच्चे रह जाते हैं, जिनकी पारिवारिक आर्थिक स्थिति अत्यंत विपन्न है। अंततः यही बच्चे सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 1 में प्रवेश लेते हैं।

तालिका 5— अध्ययन में सम्मिलित आँगनबाड़ी केंद्र एवं नामांकित बच्चों की संख्या (30 सितंबर 2023)

क्र.सं.	आँगनबाड़ी का नाम	पंजीकृत बच्चे 0–3 वर्ष		योग	पंजीकृत बच्चे 3–6 वर्ष		योग
		बालक	बालिका		बालक	बालिका	
1.	मण्डलसेरा 1	28	32	60	00	00	00
2.	मण्डलसेरा 2	22	17	39	05	05	10
3.	मण्डलसेरा 3	16	18	34	05	04	09
4	मल्ला बानरी	04	11	15	01	05	06
5.	जीतनगर 1	26	19	45	03	01	04
6.	जीतनगर 2	15	16	31	03	01	04
7.	भागीरथी	14	14	28	02	02	04
8.	गाड़गाँव	03	03	06	04	02	06
9.	फल्टनियां	10	05	15	01	01	02
10.	घिरोली	11	16	27	00	00	00
	योग	149	151	300	24	21	45

स्रोत— जिला महिला एवं बाल विकास परियोजना कार्यालय, जनपद—बागेश्वर, उत्तराखंड. 30 सितंबर 2023

आँगनबाड़ी केंद्र घिरोली में तो 3–6 आयु वर्ग का एक भी बच्चा नामांकित नहीं था। बातचीत में माताओं या अभिभावकों ने बताया, "बच्चों की पढ़ाई-लिखाई के लिए ऐसा करना ज़रूरी हो जाता है।" सरकारी विद्यालयों में निरंतर घटते नामांकन की एक प्रमुख वजह यह समझ में आती है और दूसरी आँगनबाड़ी केंद्रों द्वारा व्यवस्थित रूप से नर्सरी शिक्षा संचालित कर पाने की असमर्थता को भी यह रेखांकित करता है। कुछ आँगनबाड़ी कार्यकत्रियों ने तल्ख लहजे में बताया, "आँगनबाड़ी केंद्र तो छोटे बच्चों की देखभाल केंद्र मात्र बनकर रह गए हैं।" इसके अतिरिक्त आँगनबाड़ी केंद्रों के अवलोकन से निम्न बातें सामने आईं—

- अवलोकित 10 आँगनबाड़ी केंद्रों में से मात्र चार आँगनबाड़ी केंद्र सरकारी प्राथमिक विद्यालय परिसर में संचालित हैं। चार पंचायत के सामुदायिक भवनों में तथा दो किराए के मकान में संचालित हैं। सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में, विद्यालय द्वारा उपलब्ध कराए गए एक कक्ष में संचालित हैं। अतः बच्चों के लिए स्वतंत्र रूप से खेलने एवं गतिविधियों के आयोजन के लिए पर्याप्त जगह की कमी दृष्टिगत होती है। किराए के कमरे में संचालित आँगनबाड़ी केंद्रों में यह समस्या अधिक गहन प्रतीत होती है। केंद्रों में बच्चों के लिए बैठने के लिए उपयुक्त फर्नीचर उपलब्ध नहीं है, बच्चे दरी पर ज़मीन पर बैठते हैं। बच्चों के साथ आने वाली माताओं या अभिभावकों के लिए बैठने या प्रतीक्षा का अलग से स्थान न होने के कारण, ज़रूरत पड़ने पर कक्ष में ही बच्चों के साथ दरी पर बैठती हैं। एक सकारात्मक बात यह दिखाई दी कि माताएँ या अभिभावक अपने बच्चों को केंद्र पर छोड़ने आते हैं, छुट्टी होने पर पुनः आकर घर ले जाते हैं। इसका कारण यह है कि इन केंद्रों में 3 वर्ष से कम आयु वर्ग के बच्चों की संख्या अधिक है, अतः ऐसा करना उनके लिए ज़रूरी हो जाता है।
- आँगनबाड़ी केंद्रों में शिक्षण प्रक्रिया का अवलोकन करने पर दृष्टिगत होता है कि केंद्र की प्रमुख चिंता एवं सरोकार बच्चों को यथा समय पोषाहार मिल जाए, इसकी दैनिक आधार पर रिपोर्ट बनानी होती है। केंद्र में, खेल सामग्री के रूप में कुछ खिलौने उपलब्ध हैं, इनसे बच्चों को खेलने का मौका दिया जाता है परंतु इनका शिक्षणशास्त्रीय उपयोग दिखाई नहीं देता। बहुधा कार्यकत्रियों की दूसरी व्यस्तताएँ होने पर बच्चों को व्यस्त रखने के लिए इन खिलौनों का उपयोग किया जाता है।

शिक्षण एवं अकादमिक प्रक्रियाएँ

आँगनबाड़ी केंद्रों की शिक्षण एवं अकादमिक प्रक्रियाओं का अवलोकन करने पर प्रमुख बिंदु ज्ञात हुए, जो निम्नवत हैं—

- आँगनबाड़ी केंद्र में बच्चों को प्रतिदिन पोषाहार दिया जाता है और प्रतिदिन इसकी रिपोर्टिंग उच्च स्तर के अधिकारियों को करनी होती है। अतः केंद्र पर कार्यरत कार्यकत्री या सहायक कार्यकत्री की मुख्य चिंता एवं सरोकार पोषाहार निर्धारित समय पर बच्चों को उपलब्ध कराना है। माताएँ या अभिभावक भी इसको महत्व देते हैं।
- बच्चों को परंपरागत विधि से पढ़ाया जाता है। वर्णमाला, मात्राएँ, सरल शब्द, कठिन शब्द,

वाक्य आदि। लिखने से शुरुआत की जाती है। बहुधा बच्चे ब्लैक-बोर्ड या व्हाइट बोर्ड पर लिखे हुए को उतारते हैं, बाद में इनको पढ़ने (वस्तुतः रटने) का उपक्रम चलता है। बातचीत में कार्यकत्री या सहायक कार्यकत्रियों ने बताया, "अभिभावक बच्चों की कापी में किए गए काम को, केंद्र में पढ़ाई-लिखाई मानते हैं, इसलिए हम लोग भी कोशिश करते हैं, जल्दी से जल्दी बच्चे लिखने लगें।" लिखने से पहले बच्चों के 'समझकर सुनने', 'अर्थपूर्ण बोलने', 'अभिव्यक्त करने' के कौशलों के विकास करने का उपक्रम दिखाई नहीं देता है।

- बच्चों से बातचीत बहुत सीमित है, इसके बजाय निर्देश अधिक दिए जाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि बच्चे भी धीरे-धीरे निर्देशों के अभ्यस्त होने लगे हैं। यह निर्देश केंद्र की औपचारिक भाषा हिंदी में दिए जाते हैं परंतु बच्चे आपस में बातचीत अपने घर की भाषा में करते हैं। यहाँ पर उल्लेख करना समीचीन होगा कि 3–6 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों का भाषा एवं गणितीय दक्षता का आकलन करने के क्रम में बच्चों से बातचीत करने की ज़रूरत थी। अतः इसके लिए सहज वातावरण निर्मित करने के लिए शोधार्थी द्वारा बच्चों की घर की भाषा (यह भाषा कुमाँउनी है) में बातचीत की गई।
- भाषा एवं गणित में बुनियादी दक्षता प्राप्त करने के लिए ज़रूरी है कि बच्चों के परिवेशीय अनुभवों को कक्षा में स्थान मिले और यह बच्चों की मौखिक भाषा के माध्यम से बेहतर तरीके से हो सकता है। मौखिक भाषा या मौखिकता को कक्षा में स्थान देने के लिए बच्चों से उद्देश्यपूर्ण बातचीत के अधिक से अधिक अवसर सृजित करने की ज़रूरत होती है। अवलोकन में इसका अभाव देखा गया। इसके दो प्रमुख कारण स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। पहला, आँगनबाड़ी केंद्र पर बच्चों को सीखने-सिखाने के अतिरिक्त बहुत से कार्य-दायित्वों का दवाब है, आँगनबाड़ी केंद्र के लाभार्थियों में 0–6 वर्ष के बच्चों के साथ-साथ, किशोरियाँ, गर्भवती एवं धात्री भी शामिल हैं। दूसरा, यह अनुमान किया जा सकता है कि कार्यकत्रियाँ बालशिक्षण हेतु उपयुक्त शिक्षणशास्त्र से परिचित या अभिमुखीकृत नहीं हैं।
- आँगनबाड़ी केंद्रों में, बच्चों को शारीरिक विकास संबंधी अभिलेख, यथा— लंबाई, वज़न आदि अभिलेख उपलब्ध हैं, परंतु बच्चों की शैक्षिक प्रगति के आकलन के व्यवस्थित अभिलेख उपलब्ध नहीं हैं। बच्चों की अभ्यास पुस्तिका में किए गए काम को ही उनके सीखने के साक्ष्य के रूप में अधिकांश आँगनबाड़ी केंद्रों में दिखाया गया।
- आँगनबाड़ी केंद्र प्राथमिक विद्यालय से अलग 'एकल द्वीप' में काम करते दिखाई देते हैं, यह तथ्य सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में संचालित आँगनबाड़ी केंद्रों के बारे में भी सही है। इन दोनों एजेंसियों के मध्य अकादमिक सहयोग, विचार-विनिमय, समन्वय के कोई साक्ष्य दिखलाई नहीं देते, जबकि आँगनबाड़ी केंद्र में नामांकित बच्चों को आगामी भविष्य में प्राथमिक विद्यालयों की कक्षा 1 में प्रवेश लेना है, यह आश्चर्यजनक है।
- आँगनबाड़ी की दिनचर्या में बच्चों की माताओं या अभिभावकों से बच्चों की विगत दिनों की गैर-हाज़िरी के बाबत बातचीत होती देखी गई

परंतु बच्चे क्या कुछ सीख रहे हैं, इस बारे में बातचीत का अभाव दिखाई दिया। इस संबंध में बच्चों की माताओं या अभिभावकों से बातचीत में उनका कहना था, "हम तो बच्चों को पोषण एवं देखभाल के लिए यहाँ भेजते हैं, आगे उनको पढ़ने के लिए प्राइवेट स्कूलों में भेज देंगे।" संभवतया, इसी कारण से आँगनबाड़ी कार्यकत्री या सहायक कार्यकत्री उदासीन प्रतीत होती हैं।

आँगनबाड़ी कार्यकत्रियों या सहायक कार्यकत्रियों से साक्षात्कार

इस शोध अध्ययन हेतु चयनित 10 आँगनबाड़ी केंद्रों में कार्यरत आठ कार्यकत्रियों तथा 10 सहायक कार्यकत्रियों से खुली साक्षात्कार प्रश्नावली के माध्यम से बातचीत की गई। चयनित 10 आँगनबाड़ी केंद्रों में से दो मिनी आँगनबाड़ी केंद्र (जीतनगर-2 एवं भागीरथी) हैं, जहाँ पर केवल सहायक कार्यकत्री नियुक्त हैं। साक्षात्कार प्रश्नावली के आधार पर बातचीत से निम्न प्रमुख तथ्य ज्ञात हुए—

- आँगनबाड़ी केंद्र की दिनचर्या में लाभार्थियों की स्वास्थ्य जाँच, पोषाहार एवं तत्संबंधी अभिलेखों का रख-रखाव, उच्च अधिकारियों को सूचना भेजना प्रमुख बताया गया, बच्चों को सीखने सिखाने के लिए समय की कमी बतलाई गई। इस बात को प्रमुखता से रेखांकित किया गया, "3 साल के बाद तो समर्थ अभिभावक अपने बच्चों को निजी विद्यालयों की नर्सरी कक्षा में दाखिला करा लेते हैं, इसके बाद गिने-चुने बच्चे ही केंद्रों पर रह जाते हैं।" यह तथ्य आँगनबाड़ी केंद्रों के अवलोकन में भी सामने आया।
- केवल छह कार्यकत्रियों ने 'निपुण भारत' मिशन के बारे में सुना है। इस मिशन के अंतर्गत वस्तुतः क्या किया जाना है, जिससे कि मिशन के लक्ष्य प्राप्त हो सकें, वे यह बतलाने में असमर्थ रहीं। सभी आठ आँगनबाड़ी कार्यकत्रियों को 12 अक्तूबर 2023 को वर्चुअल स्टूडियो के माध्यम से एक दिवसीय ऑनलाइन अभिमुखीकरण कार्यक्रम में शामिल होने का मौका मिला। सहायक कार्यकत्रियों को यह अवसर नहीं मिल पाया है। इस अभिमुखीकरण से 'निपुण भारत' अभियान के बारे में उनकी समझ स्पष्ट नहीं हो सकी है। इसके अलावा इनका अन्य कोई प्रशिक्षण या अभिमुखीकरण नहीं हो पाया है।
- नर्सरी कक्षाओं को पढ़ाने-लिखाने संबंधी किसी भी प्रकार का औपचारिक प्रशिक्षण इनको प्राप्त नहीं हुआ है। आँगनबाड़ी केंद्र पर कार्यकत्री या सहायक कार्यकत्री के रूप में नियुक्त होने के बाद विभागीय प्रशिक्षण प्राप्त हुआ। यह प्रशिक्षण कार्यदायित्वों के बारे में था, इसका एक छोटा-सा भाग आँगनबाड़ी केंद्र में नामांकित बच्चों की देखभाल और सीखने-सिखाने से संबंधित था।
- आँगनबाड़ी केंद्रों की संभावित 'बाल वाटिका' भूमिका के बारे में पाँच केंद्रों को जानकारी है। इसमें उनकी क्या भूमिका है? बातचीत में, इस बारे में जानकारी एवं समझ की कमी महसूस हुई। 'बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के सार्वभौमिक लक्ष्य' की समझ एवं इसके दृष्टिगत 'बाल-वाटिकाओं' की भूमिका के बारे में स्पष्टता का अभाव दिखाई दिया।

- अलग-अलग विभागों से निर्देशों का अनुपालन, लक्ष्य की एकता एवं स्पष्टता में कमी, अभिभावकों से फीडबैक का अभाव, लाभार्थियों तक सुविधाएँ पहुँचाने में अधिक समय लगना आदि कारणों से बच्चों को पढ़ाने के लिए समय की कमी बताई गई।
- *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के दृष्टिगत आँगनबाड़ी केंद्रों को नर्सरी कक्षाओं का संचालन करना है, इसमें 'बाल वाटिका' की भूमिका महत्वपूर्ण है। इसके लिए क्या किया जाना ज़रूरी है? इस प्रश्न पर लगभग सभी कार्यकत्रियों या सहायक कार्यकत्रियों का कहना था, "यदि हमसे नर्सरी स्तर की कक्षाओं को पढ़ाने की अपेक्षा की जा रही है तो सबसे पहले कार्यकत्री का टैग हटाया जाए तथा हमें नर्सरी शिक्षिका का दर्जा दिया जाना चाहिए।" *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में भी कहा गया है, "5 वर्ष की आयु से कम उम्र का प्रत्येक बच्चा एक 'प्रीपेटरी कक्षा' या बाल वाटिका (जो कि कक्षा 1 से पहले है) में जाएगा, जिसमें एक योग्य ई.सी.सी.ई. शिक्षक होगा।"
- बच्चों की माताओं या अभिभावकों से बच्चों की पढ़ाई-लिखाई से संबंधित किसी भी प्रकार का सहयोग न मिलने की बात बतलाई गई। इस संबंध में अभिभावकों से बातचीत करने पर यह बात सामने आई कि माताएँ या अभिभावक किस प्रकार से सहयोग दे सकते हैं? इसकी न तो उनको जानकारी है और न ही इस बारे में आँगनबाड़ी केंद्र ने कभी बताया या बातचीत की।

समेकन एवं सुझाव

बहुत छोटे प्रतिदर्श पर आधारित इस शोध अध्ययन से प्राप्त अनुभव एवं अंतर्दृष्टि के आलोक में अग्रलिखित सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं—

- आँगनबाड़ी केंद्रों को नर्सरी कक्षाओं के संचालन एवं 'बाल वाटिका' के माध्यम से प्राथमिक विद्यालय की कक्षा 1 में सहज पारगमन में भूमिका निर्वहन करना है तो इन केंद्रों को न केवल भौतिक रूप से साधन संपन्न करने की आवश्यकता है वरन अकादमिक क्षमता संवर्धन करने की भी नितांत आवश्यकता है। "आँगनबाड़ी केंद्रों की भौतिक संसाधनों की कमी का अनुमान इस तथ्य से भी लगाया जा सकता है कि जिस दिन उत्तराखंड राज्य में चिह्नांकित आँगनबाड़ी केंद्रों के 'बाल वाटिका' के रूप में कार्य करने की घोषणा की गई, उसी समय प्रदेश में 3,940 आँगनबाड़ी केंद्रों में भवनों के जल्द निर्माण की भी घोषणा की गई।" (सिंह एवं छेत्री 2014)
- आँगनबाड़ी केंद्र भारत सरकार द्वारा वित्त-पोषित योजनान्तर्गत संचालित हैं। ये केंद्र, राज्य सरकार, विशेषकर विद्यालयी शिक्षा विभाग द्वारा समय-समय पर जारी निर्देशों का अनुपालन भी करते हैं परंतु बहुत बार आदेश या निर्देश में असमानता के कारण भ्रम की स्थिति निर्मित होती है। इसके लिए इन केंद्रों को पूर्णतया विद्यालयी शिक्षा विभाग के निर्देशन एवं नियंत्रण में लाया जाना चाहिए। इस बारे में नीतिगत निर्णय लेने की आवश्यकता होगी।
- आँगनबाड़ी केंद्रों में कार्यरत कार्यकत्रियों को नर्सरी शिक्षिका पद-नाम, पदस्थिति देने की आवश्यकता है। इसके साथ ही आवश्यक प्रशिक्षण एवं अभिमुखीकरण करने की तत्काल आवश्यकता है। इनकी मल्टी-टास्किंग भूमिका पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है।

0–6 आयुवर्ग के बच्चों के पोषण, सीखने-सिखाने से संबंधित कार्यों के अतिरिक्त अन्य कार्यों को किसी अन्य एजेंसी को देने के बारे में विचार किया जा सकता है।

- प्राथमिक विद्यालयों एवं आँगनबाड़ी केंद्रों को अलग-अलग द्वीपों में काम करने के बजाय एक-दूसरे से समन्वय, सहकार एवं सहयोग करते हुए काम करने की आवश्यकता है। आँगनबाड़ी केंद्र में नामांकित बच्चों को आगामी भविष्य में प्राथमिक विद्यालयों में प्रवेश लेना है। यह सुझाया जा सकता है कि प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत प्रधान-अध्यापकों को कार्यकत्रियों या सहायक कार्यकत्रियों के मेंटर के रूप में नियुक्त करने पर विचार किया जा जाए। ऐसा करने से आँगनबाड़ी केंद्र से निजी विद्यालयों की नर्सरी कक्षाओं में नामांकन की प्रवृत्ति पर कमी आ सकती है। वस्तुतः सरकारी प्राथमिक विद्यालय भी उत्तरोत्तर नामांकन में कमी की समस्या से जूझ रहे हैं।
- आँगनबाड़ी केंद्र की बदलती भूमिका के बारे में माताओं या अभिभावकों या समुदाय में जन-जागरूकता एवं चेतना का प्रचार-प्रसार करने की तात्कालिक आवश्यकता है। अभी तक इन केंद्रों के बारे में समुदाय में यह धारणा व्याप्त है, "ये केंद्र बच्चों की देखभाल एवं पोषण आवश्यकताओं के लिए बने हैं।" कार्यकत्रियों का पद-नाम बदलकर नर्सरी शिक्षिका करने से बहुत सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। इससे समुदाय में यह संदेश निःसंदेह प्रसारित होगा कि केंद्र बच्चों की नर्सरी कक्षाओं की पढ़ाई-लिखाई के लिए सक्षम एवं ज़िम्मेदार है।
- वर्तमान में प्राथमिक शिक्षकों की सेवा-पूर्व एवं सेवारत प्रशिक्षण आवश्यकताओं को संबोधित करने के लिए जनपद में कार्यरत जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान अकादमिक रूप से सक्षम हैं परंतु पूर्व-प्राथमिक या नर्सरी शिक्षकों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं को संबोधित करने में अकादमिक रूप से सक्षम नहीं हैं। अतः इस संस्थान में कार्यरत फैकल्टी की क्षमता संवर्धन करने की तात्कालिक आवश्यकता है। ऑनलाइन प्रशिक्षणों, गूगल मीट के माध्यम से आँगनबाड़ी कार्यकत्रियों की क्षमता संवर्धन के बारे में संदेह है। बहुत आवश्यक है कि नर्सरी कक्षाओं के शिक्षण हेतु आवश्यक ज्ञान, कौशल एवं अभिवृति के विकास के लिए संस्थागत आधार पर औपचारिक प्रशिक्षण दिया जाए।
- 'बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान' हेतु निर्धारित दक्षता स्तर के आधार पर बच्चों का आकलन करने पर इस बात का आशंका है कि इसे प्राप्त करने में असफल रहने पर बच्चों पर, इस प्रकार का लेबल लग जाएगा। बाद में, इनके लिए कुछ अलग रणनीति पर पुनर्विचार किया जाए। इस प्रकार से टैग किए गए बच्चों पर विपरीत असर पढ़ने की आशंका है। अतः यह ऐसे बच्चों के शिक्षा की मुख्यधारा में शामिल होने में अवरोध के रूप में ही परिलक्षित होगा।
- भले ही यह दावा किया गया है कि 'बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान' का लक्ष्य सभी बच्चों को इसके दायरे में लाना है परंतु प्रच्छन्न रूप से 'बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान' की संकल्पना, मुख्यतया ग्रामीण पृष्ठभूमि के

आर्थिक एवं सामाजिक रूप से अपवंचित वर्ग के बच्चों के लिए प्रतीत होती है। इस प्रकार से दो वर्ग स्पष्ट दिखाई देते हैं। पहला ऐसे संभ्रांत वर्ग के बच्चे जिनको उच्च शुल्क वाले निजी विद्यालयों में समृद्ध वातावरण एवं सामग्री उपलब्ध है और दूसरा ऐसे बच्चे जो आँगनबाड़ी केंद्रों में नामांकित है। इस दूसरे वर्ग के बच्चों को समृद्ध वातावरण एवं सामग्री न मिल पाने के कारण, तुलनात्मक रूप से इनके पिछड़ने का खतरा है। अतः समाज के अपवंचित एवं विकल्पहीन बच्चों की पूर्व-प्राथमिक या नर्सरी शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए, आँगनबाड़ी केंद्रों को अकादमिक एवं भौतिक रूप से सक्षम एवं प्रभावी बनाने की आवश्यकता है।

- बच्चों को प्राथमिक स्तर की प्रथम कक्षा 1 में प्रवेश करने के लिए केवल इस आधार पर नहीं रोका जाना चाहिए कि बच्चे ने बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ.एल.एन.) का वांछित दक्षता स्तर प्राप्त नहीं किया है। अकादमिक शोध एवं अनुभव बताते हैं कि दक्षताएँ किसी निर्धारित टाइम-फ्रेम में अर्जित नहीं की जा सकती वरन प्रत्येक बच्चे की सीखने की गति, रुचि-अभिरुचि, परिवेशीय वातावरण, माता-पिता या अभिभावकों की जागरूकता एवं संलग्नता, कक्षा का वातावरण, शिक्षक या शिक्षिका की अकादमिक क्षमता आदि कारको पर निर्भर करती है। दक्षताएँ सतत रूप से अर्जित की जाती हैं और इनमें उत्तरोत्तर दृढ़ता आती जाती है। बुनियादी स्तर की *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022* रेखांकित करती है, "फाउंडेशनल स्टेज को औपचारिक स्कूली शिक्षा की नींव स्थापित करने के रूप में भी देखा जाता है। सीखने की सकारात्मक आदतों का विकास, जो औपचारिक स्कूलों के लिए उपयुक्त है, इस चरण के लिए एक और महत्वपूर्ण पाठ्यचर्या का उद्देश्य बन जाता है।"
- समुदाय में आँगनबाड़ी केंद्र को लेकर आम धारणा है कि ये केंद्र छोटे बच्चों, गर्भवती एवं धात्री महिलाओं को विशेष सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए हैं और कार्यकत्रियों या सहायक कार्यकत्रियों की महत्वपूर्ण भूमिका यही है। इन केंद्रों में पूर्व-स्कूली स्तर या नर्सरी कक्षाओं की पढ़ाई-लिखाई का भी प्रावधान है, इस बारे में सजगता, जागरूकता एवं आग्रह का अभाव दिखलाई देता है। यह भी सही है कि कार्यों की अधिकता एवं विविधता के कारण आँगनबाड़ी केंद्र बच्चों के शिक्षण पर कम ध्यान दे पाते हैं। इस बात को बुनियादी स्तर की *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022* स्वीकार करते हुए रेखांकित करती है, "आँगनबाड़ियों में शिक्षा के घटक पर ध्यान कई कारणों से अपर्याप्त रहा है, जैसे— उपलब्ध समय, शिक्षक की क्षमता, पढ़ने से पहले की गतिविधियाँ, लिखने से पहले की गतिविधियाँ और संख्या-पूर्व अवधारणाओं से संबंधित गतिविधियाँ आमतौर पर आँगनबाड़ियों में बहुत कम होती हैं।"
- 'बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान' के लक्ष्य के दृष्टिगत आँगनबाड़ी केंद्रों को आगामी वर्षों में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करना होगा। यह तब तक जारी रहने की संभावना है जब तक कि समाज के आर्थिक एवं सामाजिक

दृष्टि से अपवंचित वर्ग के सभी बच्चे भाषा एवं गणित की बुनियादी दक्षता के साथ औपचारिक कक्षा 1 में सुगमता एवं सहजता के साथ पारगमन करने में सक्षम न हो जाएँ। अतः आँगनबाड़ी केंद्रों को तदर्थ आधार पर 'बाल-वाटिका' या नर्सरी शिक्षा केंद्र के रूप में निर्धारित कर देने से आगे, नीतिगत आधार पर, आँगनबाड़ी केंद्रों को पूर्व-प्राथमिक शिक्षा केंद्र या नर्सरी शिक्षा केंद्र के रूप में संस्थागत स्वरूप देने की आवश्यकता है। किसी भी शैक्षिक संस्थान के बारे में समुदाय की धारणा, उस संस्था के विहित नाम के आधार पर भी बनती है। 'आँगनबाड़ी केंद्र' विहित नाम से आँगनबाड़ी केंद्र द्वारा पूर्व-प्राथमिक कक्षा या नर्सरी कक्षाओं के संचालन का आभास नहीं मिलता। एक यह कारण भी है कि आर्थिक रूप से समर्थ अभिभावक अपने बच्चों का निजी विद्यालयों की नर्सरी कक्षाओं में दाखिला करने को महत्व देते हैं। देर-सवेर आँगनबाड़ी केंद्रों को नर्सरी शिक्षा या पूर्व-प्राथमिक शिक्षा देने वाले स्कूल का नाम देने की आवश्यकता होगी, इसी अनुरूप क्षमता संवर्धन की भी।

- 'बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान' की शब्दावली से यह संदेश प्रसारित होता प्रतीत होता है कि किसी भी बच्चे को सर्वप्रथम इसे प्राप्त करना है, इसके बाद ही अन्य विषयगत दक्षताओं को प्राप्त करने की यात्रा की ओर बढ़ा जा सकता है। बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान बच्चे की शिक्षा की यात्रा का मील का पत्थर है अंतिम लक्ष्य नहीं। अंतिम लक्ष्य तो कक्षा स्तर के अनुसार विषयों की अपेक्षित दक्षताएँ प्राप्त करना है। लक्ष्य प्राप्ति के दवाब में साधन (बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान) के साध्य के रूप में निरूपित होने की संभावना प्रबल हो जाती है। अतः बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को स्कूली शिक्षा प्रणाली की प्रक्रिया में सतत रूप से समाहित करने की आवश्यकता है न कि इसे एकांगी रूप से देखने की।

संदर्भ

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति* 2020. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2019. *पूर्व प्राथमिक पाठ्यचर्या 2019*. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

———. 2022. *विद्या प्रवेश— कक्षा 1 के बच्चों के लिए तीन माह के खेल आधारित 'स्कूल तैयारी मॉडयूल' हेतु दिशानिर्देश*. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली.

———. 2022. *बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022*, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग. 2021. राष्ट्रीय मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान मिशन 2021 'निपुण भारत'. राष्ट्रीय साक्षरता एवं संख्या ज्ञान दक्षता पहल 'निपुण भारत'. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.

सिंह, राकेश और नेहा छेत्री. 2014. *आँगनबाड़ी कार्यक्रम— एक प्रवेशिका*, अनुवाद—राकेश कुमार सिंह, न्यू एजुकेशन ग्रुप-फाउंडेशन फॉर इनोवेशन एंड रिसर्च इन एजुकेशन (एन.ई.जी.-फायर)